डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव

Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय,
भारत सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of
Government of India,
Ministry of Culture

CELEBRATING 60 YEARS

सा.अ./16/14/भा.स./प्रे.वि./

10 मार्च 2014

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान

साहित्य अकादेमी ने कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में योगदान के लिए उत्तरी एवं दक्षिणी क्षेत्र से 2011 के लिए तथा पश्चिमी क्षेत्र से 2012 के लिए तीन लेखकों/विद्वानों को तथा अकादेमी द्वारा गैर मान्यता प्राप्त भाषाओं के संदर्भ में तीन विद्वानों/लेखकों को उनकी संबंधित भाषा में योगदान के लिए भाषा सम्मान प्रदान किए जाने की घोषणा की है। साहित्य अकादेमी ने निम्नांकित तीन लेखकों/विद्वानों का चयन **कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य** के क्षेत्र में भाषा सम्मान के लिए किया है :

1. **डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी** को उत्तरक्षेत्रीय कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में उनके विशिष्ट योगदान के लिए चुना गया है।
2. **डॉ. पुतुस्सेरी रामचंद्रन** को दक्षिण क्षेत्रीय कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में उनके विशिष्ट योगदान के लिए चुना गया है।
3. **प्रो. सुमेरचंद केसरीचंद जैन** का चयन पश्चिमी क्षेत्रीय कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में उनके विशिष्ट योगदान के लिए किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने भाषा सम्मान के लिए निम्नांकित तीन लेखकों/विद्वानों का चयन गैर मान्यता प्राप्त भाषाओं में योगदान के लिए किया है :

वारली

श्री महादेव सावजी आंधेर (गुरुजी) का चयन वारली भाषा एवं साहित्य में उनके मूल्यवान योगदान के लिए भाषा सम्मान हेतु किया गया है।

बनजारा/लंबाडी

प्रो. मोतीराज भाज्नु राठौड़ और **डॉ. रामचंद्र रमेश आर्य** का चयन संयुक्त रूप से बनजारा/लंबाडी भाषा एवं साहित्य को समृद्ध करनेवाले उनके मूल्यवान योगदान के लिए भाषा सम्मान हेतु किया गया है।

प्रत्येक भाषा सम्मान में 1,00,000/- रुपये की राशि, उत्कीर्ण ताम्र फलक और प्रशस्ति-पत्र शामिल हैं। संयुक्त पुरस्कार के मामले में पुरस्कार राशि दोनों विजेताओं में बराबर बाँट दी जाती है। ये सम्मान भविष्य में आयोजितव्य विशिष्ट समारोह में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा प्रदान किए जाएँगे।

प्रकाशन/प्रसारण के लिए जारी,

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली – 110 001 | दूरभाष : +91 1123387064, 23073002 | फैक्स: +911 23382428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001 | Phone: +91 1123387064, 2307 3002 | Fax: +91 11 23382428
E-Mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in | Website : http//www.sahitya-akedemi.gov.in

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान विजेताओं के जीवन-वृत्त

कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (उत्तर)

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने मध्यकालीन भक्ति साहित्य, विशेषकर तुलसीदास और मीराबाई के भाष्य द्वारा मूल्यवान योगदान किया है। उनकी प्रकाशित कृतियों में *प्रारंभिक अवधी, लोकवादी तुलसीदास, व्योमकेश दरवेश, देश के इस दौर में, पेड़ का हाथ* आदि शामिल हैं। उन्हें सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार, हिंदी अकादमी का साहित्यकार सम्मान तथा अन्य पुरस्कार प्राप्त हैं।

कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (दक्षिण)

डॉ. पुतुस्सेरी रामचंद्रन वरिष्ठ मलयाळम् कवि होने के साथ-साथ केरल, मलयाळम् भाषा एवं साहित्य के आदि मध्यकालीन इतिहास पर आधारभूत शोध के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं। उनकी प्रकाशित कृतियों में *केरल चरित्रतिंटे आदि स्थान रेखाकळ* आठवीं शती के तमिळ काव्य कुलशेखर आलवार कृत *पेरुमाल तिरुमोऴी* आदि के अनुवाद; कन्नड रामायण के विभिन्न खंडों का प्रकाशन शामिल हैं। उन्हें 2005 का साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।

कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (पश्चिम)

प्रो. सुमेरचंद केसरीचंद जैन प्राकृत और मराठी भाषा के विद्वान हैं तथा पालि भाषा से मराठी में अनुवाद कार्य के माध्यम से बौद्ध धर्म-दर्शन में योगदान किया है। उनकी प्रकाशित कृतियों में *धर्म मंथन, तुकाराम गाथा, जटायु* (दर्शन विषयक ग्रंथ), *पति-पत्नी, प्रेम करायचय माला* (उपन्यास) और बड़ी संख्या में कहानियाँ, बाल साहित्य, शैक्षिक पुस्तकें, कोश आदि के साथ दर्जन भर संपादित कृतियाँ शामिल हैं।

गैर मान्यता प्राप्त भाषा वारली :

श्री महादेव सावजी आंधेर (गुरुजी) प्रतिष्ठित विद्वान हैं, जिन्होंने वारली समुदाय के सामाजिक, शैक्षिक और साहित्यिक क्षेत्र में प्रभूत योगदान किया है। उनकी प्रकाशित कृतियों में *आदिवासी वारली, देवदर्शन, एका अपांगची कहानी* और *आदिवासी लोक कथ वारली बोलीभाषेतुं* शामिल हैं। उन्हें के. महादेव काणे स्मृति पुरस्कार, आदिवासी सेवा पुरस्कार आदि प्राप्त हैं।

गैर मान्यता प्राप्त भाषा बनजारा/लंबाडी :

प्रो. मोतीराज भाज्नु राठौड़ एक प्रख्यात लेखक और विद्वान हैं। उनकी प्रकाशित कृतियों में *बनजारा संस्कृति, कहत कबीर, लाडेणी* (हिंदी में), *टांडा संस्कृति, गोरमति, कबीर वाद, पल निवासी* (मराठी में), *गोर बनजारा जागतो रेस* तथा *संत सेवालाल चरित्र* (बनजारा-देवनागरी लिपि में) के अलावा विभिन्न समाचारपत्रों में लेखादि शामिल हैं। वे *बनजारा धर्म पत्रिका* के संपादक हैं।

डॉ. रामचंद्र रमेश आर्य बहुश्रुत विद्वान हैं। उनकी प्रकाशित कृतियों में *बनजारा भाषा अपने आप सीख, बनजारा भाषा में लघु कथाएँ, संत सेवामाया* आदि शामिल हैं। बनजारा समुदाय पर लिखित उनके लेखादि हिंदी, मराठी, अंग्रेज़ी एवं तेलुगु की पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे हैं। उन्हें हिंदी सेवा सम्मान और मानवाधिकार पुरस्कार प्राप्त हैं।

सूची 'ख'

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

भाषा	चयन समिति सदस्य
कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (उत्तर)	प्रो. ओंकार एन. कौल डॉ. सत्यव्रत शास्त्री डॉ. नामवर सिंह
कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (दक्षिण)	डॉ. के. रामासामी डॉ. पी. श्रीरामचंद्रुडु प्रो. एम. थॉमस मैथ्य
कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (पश्चिम)	श्री हासु याज्ञिक प्रो. जी.एम. पवार श्री मोहन गेहाणी
वारली	डॉ. किरण कुमार कवठेकर डॉ. गवित महेश्वरी वीरसिंह डॉ. मधुकर आर. वाकोडे
बनजारा/लंबाडी	प्रो. यशवंत जाधव डॉ. एन. शांता नायक डॉ. वी. रामकोटि